IJAER/July- August- 2021/Volume-10/Issue-1 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

राजस्थान मे ग्रामीण पर्यटन की भावी सम्भावनाये एवं सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता

अन्नू कुमारी

शोधार्थी

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

डॉ राखी शुक्ला

माता जीजा बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

मोती तबेला इंदौर मध्य प्रदेश

सार

जबकि राष्ट्रीय और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं के लिए पर्यटन हर साल अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, इस क्षेत्र को इसकी शुरुआत की तुलना में कुछ बदलावों का सामना करना पड़ रहा है। बड़े पैमाने पर पर्यटन, उदाहरण के लिए, भले ही यह बड़ी मात्रा में लोगों को आकर्षित करता हो और महत्वपूर्ण राजस्व उत्पन्न करता हो, अब पर्यटन का सबसे आकर्षक प्रकार नहीं है। कार्य समय में कमी, शहरीकरण और संचार के विकास जैसे कारकों का अर्थ है अन्य प्रकार के पर्यटन को विकसित करने का अवसर देना। ग्रामीण क्षेत्रों को संकट से बाहर निकालने में मदद करने के लिए साधन खोजने की इच्छा के साथ मिश्रित ये कारक, ग्रामीण पर्यटन की शुरुआत को चिह्नित करते हैं। शहरों से आने वाले लोग अपने तनावपूर्ण दैनिक जीवन से बचना चाहते हैं और छुट्टियों के दौरान शांतिपूर्ण और अच्छी गुणवत्ता वाले वातावरण का आनंद लेना चाहते हैं। ग्रामीण इलाकों में इन ग्राहकों को पकड़ने की कोशिश की जाती है जो स्थानीय अर्थव्यवस्था में विविधता लाने और क्षेत्र की गतिशीलता में सुधार करने में योगदान दे सकते हैं। स्थानीय और यहां तक कि राष्ट्रीय स्तर पर हर एजेंट का कहना है कि ग्रामीण वंचित क्षेत्रों में विकास के लिए पर्यटन को एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने पर जोर पश्चिम की तुलनात्मक रूप से हाल की घटना है। ग्रामीण पर्यटन एक ओर शहरी लोगों को प्रकृति के बीच शहरी जीवन के अपने तनाव को दूर करने में मदद करता है, और दूसरी ओर, ग्रामीण क्षेत्रों को विभिन्न तरीकों से विकसित करने में मदद करता है, जैसे, ग्रामीण लोगों की आय और रोजगार सृजन, सृजित करना उनके बीच सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता, भौतिक बुनियादी ढांचे, आईसीटी सेवाओं के साथ–साथ स्वास्थ्य और शैक्षिक सेवाओं की मांग बढ़ाना, और सबसे बढ़कर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संबंध स्थापित करता है।

मुख्य शब्द : *ग्रामीण ,पर्यटन,सांस्कृतिक।*

परिचयः–

भारत की नीवं गावों पर ही निर्भर करती है। आज भारत के कई प्रांत आधुनिकता का चोला ओढ चुके है। शहरी जीवन की भाग–दौड में इतने व्यस्त हो गए है कि व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य तक का होष नहीं

है। लेकिन भारत में कई गांव आज भी ऐसे हैं जो ना केवल भारत को गौरवांतित करते है। बल्कि आज भी वंहा भारत की सभ्यता, संस्कृतिक, पंरपराएं विद्वमान है। भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन की परिभाषा में स्पष्ट किया है कि कोई भी ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्षाता हो , जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ पहुॅचता हो साथ ही पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव के अधिक समृद्व बनने की सम्भावना होए तो उसे ग्रामीण पर्यटन कहा जा सकता है। रोजमर्रा की नीरस जिन्दगी से फुर्सत के कुछ क्षण हमेषा मूड बेहतर बनाने का काम करते है। आमतौर पर लोग इस फुर्सत का इस्तेमाल यात्रांए और नये स्थान खोजनें के लिये करते हे। परन्तु लक्ष्य का चयन करने में समय और खर्च की महत्तवपूर्ण भूमिका होती है। व्यस्त पर्यटक मौसम के दौरान परम्परागत पर्यटक स्थलों पर आमतौर पर भारी भीड. होती है। आज अधिकतर समाज शहरीकृत हो चुका है। ऐसे में ग्रामीण पर्यटक शहरी आबादी के बीच निरन्तर लोकप्रिय हो रहा है। इन ग्रामीण इलाकों में आज पर्यटन भली भांति फल–फुल रहा है। ना केवल स्वच्छ वातावरण के उदेष्य से आज लोग गांवों में रूख कर रहे है। बल्कि इस स्थलों पर व्याप्त ऐतिहासिक और प्राकृतिक चीजों का भी आंनन्द ले रहें है।

विष्व विरासत का दर्जा देने वाला यूनेस्कों अब पष्चिमी राजस्थान के चार जिलों में दस नए पर्यटक केंन्द्र विकसित करेगा। इन पर्यटक केन्द्रों में पष्चिमी राजस्थान के चार जिलों जोधपुर, जैसलमेर, बाडमेर और बीकानेर के हस्तषिल्प, लोक नृत्य व संगीत, रंगमंच आदि की प्राचीन विरासत देखी जा सकेगी। राजस्थान सरकार और यूनेस्कों ने इसके लिए एक समझौता किया है। राजस्थान की प्रमुख पर्यटन सचिव श्रेया गुहा और यूनेस्कों के कंट्री डायरेक्ट्रर एरिक फॉल्ट ने इस समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए है । इसके तहत यूनेस्कों 42 महीने तक जौधपुर, बीकानेर, बाडमेर और जैसलमेर में एक विषेष पर्यटन सर्किट तैयार करने का काम करेगा।

पर्यटन किसी भी उद्देश्य जैसे अवकाश, मनोरंजन, व्यवसाय या किसी अन्य उद्देश्य के लिए यात्रा को दर्शाता है। किसी देश की अर्थव्यवस्था को पर्यटन के माध्यम से बदला जा सकता है। समावेशी विकास में पर्यटन का अहम योगदान माना जाता है। समावेशी विकास = समान अवसर + लोगों तक समान पहुंच (आर.बी.आई के गवर्नर, श्री रघुराम राजन)। विश्व व्यापार संगठन के अनुसार, पर्यटन में उन व्यक्तियों की गतिविधियाँ शामिल हैं जो अपने ग्रामीण परिवेश से बाहर के स्थानों में अवकाश, व्यवसाय और अन्य उद्देश्यों के लिए लगातार एक वर्ष से अधिक समय तक यात्रा नहीं करते हैं। ग्रामीण पर्यटन पर्यटन के क्षेत्र में अपेक्षाकृत एक नई अवधारणा है जो स्थानीय लोगों के लिए महान आर्थिक और सामाजिक लाभ ला सकता है। ग्रामीण पर्यटन ष्पर्यटन का एक रूप है जो ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है, अपने कार्य में ग्रामीण है और ग्रामीण पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और इतिहास के एक जटिल पैटर्न का प्रतिनिधित्व करता हैष (लेन, 1994)। ग्रामीण पर्यटन की मूल अवधारणा उद्यमशीलता के अवसरों, आय सृजन, रोजगार के अवसरों, ग्रामीण कला और शिल्प के संरक्षण और विकास, बुनियादी ढांचे के विकास और पर्यावरण और विरासत के संरक्षण के लिए निवेश के माध्यम से स्थानीय समुदाय को लाभान्वित करना है (मिश्रा, 2001)। ग्रामीण पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं और जीवन–शैली के लोगों को

एक दूसरे के करीब लाएगा और यह जीवन का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करेगा। यह न केवल लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करेगा बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक मूल्यों को भी विकसित कर सकता है। एशिया में, विशेष रूप से भारत में, ग्रामीण पर्यटन अपने वास्तविक रूप में अपेक्षाकृत नया है। ग्रामीण पर्यटन के लिए ग्रामीण आर्थिक विकास में एक प्रमुख शक्ति होने की संभावना है जिसके परिणामस्वरूप गरीबी उन्मूलन पूरी तरह से महसूस किया जाना बाकी है। ग्रामीण विकास के लिए एक रणनीति के रूप में पर्यटन विकास क्षमता का उपयोग किया जा सकता है। ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा के इर्द–गिर्द एक मजबूत मंच का विकास निश्चित रूप से भारत जैसे देश के लिए उपयोगी है, जहां लगभग 74: आबादी इसके सात मिलियन गांवों में रहती है। ग्रामीण पर्यटन उन कुछ गतिविधियों में से एक है जो इन समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकता है। इसके अलावा, ऐसे अन्य कारक हैं जो ग्रामीण पर्यटन की ओर रुझान बढ़ा रहे हैं जैसे जागरूकता के बढ़ते स्तर, विरासत और संस्कृति में बढ़ती रुचि और बेहतर पहुंच और पर्यावरण जागरूकता। विकसित देशों में, इसके परिणामस्वरूप एक आरामदायक और स्वस्थ जीवन शैली का अनुभव करने और जीने के लिए गाँव की सेटिंग में जाने की पर्यटन की एक नई शैली है।

भारत में पर्यटन उद्योग

जहां तक भारतीय पर्यटन का संबंध है, भारत के पास अपने इतिहास, संस्कृति, कला, संगीत, नृत्य, समुद्र तटों, वन्य जीवन और मेलों और त्योहारों में समृद्ध होने के कारण एक विशाल पर्यटक पर्यटन आकर्षण है। भारत में पर्यटन उद्योग रोजगार सृजन, राजस्व सृजन और इसके विशाल राष्ट्रीय और क्षेत्रीय विकास के मामले में तेजी से बढ़ता उद्योग है। भारत में पर्यटन का विकास दूसरी पंचवर्षीय योजना के समय 1956 में योजनाबद्ध तरीके से किया गया था। लेकिन वास्तविक पर्यटन छठी योजना के दौरान हुआ जब पर्यटन को सामाजिक एकीकरण और आर्थिक विकास के लिए एक प्रमुख साधन माना जाने लगा। लेकिन 80 के दशक के बाद ही भारत में पर्यटन गतिविधियों ने गति पकड़ी। भारत सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए और 1982 में पर्यटन पर राष्ट्रीय नीति की घोषणा की। बाद में 1988 में, पर्यटन पर राष्ट्रीय समिति ने पर्यटन में स्थायी विकास प्राप्त करने के लिए एक व्यापक योजना तैयार की। नई पर्यटन नीति 2002 पर्यटन के विकास में केंद्र और राज्य सरकारों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और निजी क्षेत्र की भूमिकाओं को मान्यता देती है। भारत में पर्यटन एक ब्रांड के रूप में अपने आप में आ गया है – भारत पर्यटन। मंत्रालय की नीति में कई नवीन दृष्टिकोण हैं और कई पर्यटन उत्पादों जैसे चिकित्सा पर्यटन, कल्याण पर्यटन, साहसिक पर्यटन, क्रूज पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन ने इस क्षेत्र को व्यापक बनाने में मदद की है।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन

राजस्थान में पर्यटन राज्य में आजीविका को बनाए रखने के लिए प्रमुख क्षेत्रों में से एक रहा है। राजस्थान अपनी विरासत, समृद्ध संस्कृति, हस्तशिल्प और व्यंजनों के लिए जाना जाता है, जो हर साल

अंतरराष्ट्रीय और घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। राज्य में विभिन्न प्रसिद्ध स्थल हैं। चूंकि आय और व्यय में वृद्धि जैसे विभिन्न कारकों के कारण देश और विदेश में आर्थिक परिदृश्य बदल रहा है, यह राज्य को अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने का अवसर देता है। हालांकि, राज्य में मौजूद प्रसिद्ध स्थलों के अलावा, ऐसे अन्य स्थल भी हैं जो पर्यटकों को आकर्षित कर सकते हैं जो इन प्रमुख पर्यटन स्थलों के निकट स्थित हैं। देश में पर्यटन परिदृश्य में परिवर्तन हो रहा है, ऐसे परिवर्तन के साथ राज्य को कम ज्ञात स्थलों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जो ग्रामीण, सांस्कृतिक और साहसिक अनुभव प्रदान करते हैं। राजस्थान के सदियों पुराने किलों, हवेलियों, स्मारकों, होटलों ने पर्यटकों को हमेशा आकर्षित किया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्मारकों या बड़े शहरों में खरीदारी तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि आला पर्यटन आजकल मांग में है। पर्यटन विभाग, सरकार। राजस्थान सरकार ने ग्रामीण पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करते हुए पर्यटकों को उन ग्रामीणों के दैनिक जीवन की एक झलक प्रदान करने का निर्णय लिया है जो राजस्थान का एक अनूठा स्वाद लेते हैं और इसे जीवन में एक बार का अनुभव बनाते हैं। चूंकि अधिकांश समाज गांवों में विकसित हुए हैं, इन छोटे समुदायों के साथ एक मजबूत संबंध है जहां जीवन का तरीका अक्सर अपरिवर्तित रहता है। सौभाग्य से, पर्यटन ने दुनिया भर में इस तथ्य का संज्ञान लिया है, और ग्रामीण पर्यटन के विकास ने, परिणामस्वरूप, पर्यटन आय का अधिक न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया है, और जीविका या जातीय संस्कृतियों और जीवन शैली को एक प्रोत्साहन प्रदान किया है। रंगीन जीवन शैली का चित्रण करने वाला सच्चा ग्रामीण जीवन और कहीं नहीं पाया जा सकता है। ये न केवल स्थानीय रहन–सहन, कला, नृत्य, संगीत और संस्कृति को बनाए रखने में मदद करते हैं, बल्कि स्थानीय समुदाय को ऐसी प्रथाओं पर गर्व करने की अनुमति भी देते हैं। टूर ऑपरेटर / ट्रैवल एजेंट इन्हें स्थानीय परिवहन, ऊंट की सवारी, कैंपसाइट ठहरने, स्थानीय व्यंजनों, नृत्य, संगीत, त्योहारों में भाग लेने के साथ ग्रामीण वातावरण की भावना के साथ कैंपिंग टूर या हेरिटेज टूर के साथ जोड़ सकते हैं। पूरे राजस्थान में विभिन्न छोटे गाँव और ग्रामीण कस्बे हैं जो ग्रामीण जीवन को सही मायने में दर्शाते हैं। उदयपुर, जोधपुर और शेखावाटी क्षेत्र के आसपास के क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन को संगठित तरीके से विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है।

राजस्थान के कुछ चुनिंदा स्थलों में ग्रामीण पर्यटन

- **बांसवाड़ा:** बांसवाड़ा जिला अरावली की घाटियों के बीच स्थित है जो आदिवासी संस्कृति को उसके मूल रूप में दर्शाता है। अधिकांश क्षेत्र पूर्व में बांस के झुरमुटों से ढका हुआ है, जिसके कारण इसे बांसवाड़ा नाम दिया गया था। इस क्षेत्र में, आदिवासी ज्यादातर भील हैं लेकिन जिले में मीना, डामोर, चारपोटस आदिवासी भी देखे जा सकते हैं। बांसवाड़ा में घूमने के लिए विभिन्न मंदिर और ऐतिहासिक स्थान हैं। बांसवाड़ा घूमने का सबसे अच्छा समय बनेश्वर मेला है। यह रंगीन आदिवासी मेला बनेश्वर में मनाया जाता है। आनंद सागर झील और डायलाब झील इस जगह की अन्य दो झिलमिलाती झीलें हैं। "यहां के आदिवासी बांस की टोकरियां, लैंप शेड, बांस की अलमारियां, ट्रे और संगमरमर की नक्काशी जैसे देवताओं, अगरबत्ती स्टैंड बनाने जैसी विभिन्न गतिविधियों में शामिल हैं। कुछ जनजातियों को व्यापारिक समुदाय द्वारा संगमरमर की नक्काशी जैसे सजावटी टुकड़े, देवताओं, और कलात्मक वस्तुओं जैसे थोरानम पर नियोजित किया जाता हैष

(बीज मई 2006)। बांसवाड़ा का दौरा आदिवासी संस्कृति और इतिहास का गहन ज्ञान प्रदान करेगा।

- **डूंगरपुर:** उदयपुर से 120 किलोमीटर दूर स्थित डूंगरपुर को पहाडियों का शहर भी कहा जाता है। आदिवासी ज्यादातर भील हैं और जिले में कुछ उप जनजातियां हैं। राजस्थान की कच्ची सुंदरता को देखने के लिए डूंगरपुर गांव के आकर्षण सबसे अच्छे हैं। गैब सागर झील, जूना महल पैलेस, श्रीनाथजी श्राइन विभिन्न आकर्षण के स्थान हैं। यहां कोई भी पारंपरिक श्गट्टे की सब्जीश के साथ लकड़ी की आग पर पके हुए ताज़ी ब्रेड की एक प्लेट की कोशिश करके ग्रामीण स्वाद की कोशिश कर सकता है, अपने सामने मथने वाले ताज़े मक्खन का स्वाद चख सकता है, और स्वाद और यादों को संजो सकता है। आपका जीवन। डूंगरपुर से 9 किलोमीटर की दूरी पर स्थित भुवनेश्वर में होली के बाद मेले के दौरान भील जनजातियों द्वारा किए जाने वाले गैर नृत्य का अनुभव किया जा सकता है।

- **उदयपुर:** राजस्थान के दक्षिण में झीलों की नगरी उदयपुर में आदिवासी आबादी है। अधिकांश आदिवासी भील और उनकी उप जनजातियों से संबंधित हैं। फतेह सागर झील के किनारे उदयपुर से 3 किलोमीटर की दूरी पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए क्षेत्र में हस्तशिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए शिल्पग्राम की स्थापना की गई थी। यह एक संग्रहालय है जो जिले में और जिले के अन्य हिस्सों में तैयार किए गए हस्तशिल्प और हथकरघा की किस्मों को दर्शाता है। संग्रहालय में विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली विभिन्न झोपड़ियां हैं। इनमें से 2 झोपड़ियां भीलों और सहरियाओं के आदिवासी किसान समुदायों का प्रतिनिधित्व करती हैं। झलोंकागुड़ा उदयपुर के पास प्राकृतिक सुंदरता के साथ एक गांव है और मंदिरों और धार्मिक महत्व के स्थानों से भरा है। पर्यटक ग्रामीणों के साथ बातचीत कर सकते हैं और कुम्हार, लोहार, किसानों और डेयरी वालों के जीवन जीने के तरीके को जान सकते हैं। कुलियों और लोहारों द्वारा बनाए गए शिल्प का भी अनुभव किया जा सकता है।

- **सिरोही:** सिरोही जिले में मुख्यतः दो प्रकार की जनजातियाँ पाई जाती हैंरू भील और ग्रासिया। जनजातीय लोगों का जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक परंपराओं और सामाजिक रीति–रिवाजों से भरा होता है। सिरोही के लोगों के मनोरंजन और मनोरंजन का स्रोत उनका लोक नृत्य और लोक संगीत है। गच्ची घोड़ी नृत्य आदिवासी लोगों द्वारा किया जाने वाला बहुत ही आकर्षक नृत्य है। आदिवासी समुदायों द्वारा मनाए जाने वाले विभिन्न मेले और त्यौहार हैं

राजस्थान में पर्यटन उद्योग के सामने चुनौतियां और अवसर

कोई आश्चर्य नहीं कि राजस्थान अपनी संस्कृति, परंपरा, व्यंजन, वेशभूषा और अपने अनगिनत कला रूपों के कारण एक पर्यटन स्थल के रूप में अद्वितीय लाभ प्राप्त करता है। लेकिन यह सच है कि राजस्थान को परिवहन और संचार के साधनों में अविकसित और पिछड़े की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, खासकर जब देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में। इसी प्रकार रहने, ठहरने की सुविधा, परिवहन तथा यात्रा

के दौरान पीने के पानी की समस्या का सामना पर्यटकों को करना पड़ता है। यह देखा गया है कि विदेशी पर्यटक विशेष रूप से प्राचीन वस्तुओं, कला वस्तुओं और दैनिक उपयोग की चीजों जैसे राजस्थानी जूते, वस्त्र, आभूषण आदि से आकर्षित होते हैं। ये दुकान मालिक और व्यवसायी अपने विज्ञापन के माध्यम से पर्यटकों को धोखा देकर पैसा कमाते हैं।

अतः उपरोक्त समस्याओं से निजात पाने के लिए तथा पर्यटकों के प्रवाह को बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि पर्यटन विभाग आवास, परिवहन एवं ठहरने की सुविधाओं के लिए उपयुक्त रणनीति तैयार करे। उसके लिए सरकार को चाहिए कि वह रेलवे और सड़क परिवहन के आधुनिकीकरण को बड़े पैमाने पर अपनाए। पर्यटकों के आरामदेह प्रवास की सुविधा के लिए होटल उद्योग को हर संभव प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। मानक होटल और लॉज के निर्माण के लिए सरकार को उपयुक्त भूमि, वित्तीय सहायता और अन्य ऐसी सब्सिडी आवंटित करनी चाहिए जो पर्यटकों के लिए पर्याप्त आवास बनाने के लिए होटल व्यवसाय समुदायों और एजेंसियों को प्रोत्साहित कर सकें।

कदाचार की समस्या को दूर करने के लिए सरकार को चाहिए कि वह हस्तशिल्प और शिल्पकृतियों को सीधे निर्माताओं से खरीदें और बिचौलियों की मुनाफाखोरी से बचें। इसी प्रकार पर्यटकों की सहायता के लिए इतिहास, परंपरा, कला, संस्कृति, शिल्पकला और हस्तशिल्प से संबंधित साहित्य तैयार कर व्यापक प्रचार–प्रसार करने का प्रयास किया जा सकता है। पर्यटक गाइड भी पर्यटन उद्योग के विकास मंख एक बड़ी भूमिका निभाते हैं, इसलिए संस्कृति के बारे में उचित शिक्षा और प्रशिक्षण और अपने कौशल का विकास करते हैं ताकि वे अपने पेशे के मानदंडों को पूरा कर सकें।

शोध का उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र की भौतिक एंव सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।

2. अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण अंचल में उपलब्ध प्राकृतिक सांस्कृतिक एंव ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का अध्ययन।

3. अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन के नए आयामों की संभावनाओं को जानना।

निष्कर्ष

सभी सफल पर्यटन एजेंसियां/उद्योग अनुसंधान और विकास के लिए संसाधनों को समर्पित करते हैं। ग्रामीण पर्यटन अभी भी व्यवसाय का एक अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है, और इसलिए, बहुत बुनियादी शोध की आवश्यकता है। इस क्षेत्र के मुक्त उद्यम पर्यटन बाजार 138 की अत्यधिक प्रतिस्पर्धी प्रकृति के कारण यह बुनियादी शोध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। विशेष रुचि, स्वतंत्र अवकाश–निर्माण के विकास के कारण ग्रामीण इलाकों में आंतरिक लाभ हो सकते हैं, लेकिन मौजूदा रिसॉर्ट्स और बड़े पैमाने पर पर्यटन उद्यम

पहले से ही शोध कर रहे हैं कि बाजार में हिस्सेदारी हासिल करने के लिए अपने विपणन और अपने उत्पादों को कैसे बेहतर बनाया जाए। लगभग सभी व्यावसायिक क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास में सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच साझेदारी शामिल है। यदि ग्रामीण पर्यटन और उसके विकास को सफल बनाना है तो साझेदारी की बहुत आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों और उद्यमों का सार्वजनिक क्षेत्र के हस्तक्षेप का इतिहास रहा है। ग्रामीण पर्यटन खंडित और तदर्थ तरीके से बढ़ रहा है: सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी गतिविधियों का समन्वय कर सकती है। चूंकि कई ग्रामीण पर्यटन गतिविधियां सार्वजनिक क्षेत्र में होती हैं, इसलिए प्राथमिक उत्पादन से दूर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के दौरान स्थापित सामुदायिक लक्ष्यों जैसे परिदृश्य, प्रकृति और विरासत संरक्षण को बनाए रखने के लिए पर्यावरण और आगंतुक प्रबंधन में सावधानीपूर्वक शोध आवश्यक है। सेवा क्षेत्र पर अधिक निर्भरता पर्यटन संयंत्र सुविधाओं के संबंध में समकालीन मांग–आपूर्ति पैटर्न का पूर्वानुमान और राज्य भर में फैले मौजूदा आकर्षण स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि हालांकि जहां तक पर्यटकों की अपेक्षाओं का संबंध है, अध्ययन क्षेत्र काफी अच्छा है, फिर भी गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टि से सुधार की संभावना है, जो बदले में राजस्थान में पर्यटन के विकास और विकास में एक निर्णायक भूमिका निभाता प्रतीत होता है।

सन्दर्भग्रन्थसूची

[1]. ओझा, जे.के. –राजस्थान का सांस्कृति इतिहास, जोधपुर, 1989

[2]. भटनागर, वीरेन्द्रस्वरूप–सवाईजयसिंह, जयपुर, 1972

[3]. भट्ट, मथुरानाथ शास्त्री –जयपुरवैभवम् काव्य, जयपुर, 1947

[4]. बहुरा, गोपालनारायण (सं.) –सवाईजयसिंहचरित, जयपुर, 1979

[5]. मंडावा, कुंवरदेवीसिंह–कछवाहोंकाइतिहास, जयपुर।

[6]. गहलोत, जगदीशसिंह–कछवाहोंकाइतिहास, जोधपुर

[7]. गुप्त, मोहनलाल–गुलाबीनगरकीगुलाबी यादें, जयपुर, 1987

[8]. गहलोत, जगदीशसिंह–राजपूतानेकाइतिहास : जयपुर व अलवरराज्य, जोधपुर, 1966

[9]. नाटाणी, प्रकाशचन्द्र, अपनाराजस्थान, शिवबुकडिपो, जयपुर, 1998

[10]. निगम, एम.एन., यातायात एवंसंदेशवाहन के साधन एवंराजस्थानकाभूगोल, राजस्थानहिन्दीग्रन्थअकादमी, जयपुर, 1993

[11]. मनोहर, राघवेन्द्र, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थानहिन्दीग्रन्थअकादमी, जयपुर, 2000

[12]. माथुर, विजयेन्द्रकुमार ऐतिहासिकस्थानावली, राजस्थानहिन्दीग्रन्थअकादमी, जयपुर, 1990

[13]. राव, बालकृष्ण, राजस्थानमेंभ्रमण, बाड्मेय प्रकाशन, जयपुर

[14]. व्यास, डॉ. राजेशकुमार, राजस्थानमेंपर्यटनप्रबन्ध, राजस्थानग्रन्थागार, जोधपुर, 2004 एवंपर्यटन के सिद्धान्तऔरव्यवहार, राजस्थानीग्रन्थागार, जोधपुर 2003

[15]. नीरज, जयसिंह एवं शर्मा, बी.एल.–राजस्थान की सांस्कृतिकपरम्परा, जयपुर, 1989

[16]. ए.के. रैना और नीलू जैन, "पर्यटन की गतिशीलता – अवधारणाएं, दर्शन और रणनीतियां", कनिष्क प्रकाशक, वितरक, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2004।

[17]. चमन लाल रैना और अभिनव कुमार रैना, "फंडामेंटल्स ऑफ टूरिज्म एंड इंडियन रिलिजन – प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिसेज", कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2005।

[18]. दिलीप मुकन, "21 वीं सदी की श्रृंखला पर पर्यटन विकास – पर्यटन की अवधारणाष, अध्ययन प्रकाशक और वितरक, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2006।

[19]. कैलाश हरिहरन अय्यर, "भारत में पर्यटन विकास", विस्टा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, (भारत), पहला संस्करण, 2006।

[20]. मनोज दीक्षित और चारु शीला, "पर्यटन उत्पाद", न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ, पहला संस्करण, 2001।

[21]. मुकेश रंगा, "भारत में पर्यटन क्षमता", अभिजीत प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2003।

[22]. विशाल अग्निहोत्री, "पर्यटन और यात्रा प्रबंधन पर एक पूर्ण पुस्तक", साइबर टेक प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 2007.